6. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर टिप्पणी लिखिए। (9×2=18)

(i) उपन्यास के तत्व।

(ii) कर्मभूमि उपन्यास के आधार पर सुखदा का चरित्र - चित्रण।

(iii) उपन्यासकार फणीश्वरनाथ रेणु

(iv) रागदरबारी उपन्यास में ग्रामीण जीवन।

[This question paper contains 4 printed pages.]

04.06.24(M)

Maitreyi College LIBRARY Chanakyapuri, New Delhi-110021

Your Roll No.............

Sr. No. of Question Paper : 5218 **H**

Unique Paper Code : 2052102403

Name of the Paper : Hindi Upanyas

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi – DSC**

Semester : IV

समय : 3 घण्टे **पूर्णांक : 90**

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. हिंदी उपन्यास के उदभव पर प्रकाश डालते हुए प्रेमचंद युगीन उपन्यासों की विशेषताएँ बताइए। (15)

अथवा

हिन्दी उपन्यास के स्वरूप को स्पष्ट कीजिए।

(CM) Library stamp

2. मुंशी प्रेमचंद अथवा मन्नू भंडारी के साहित्यिक योगदान पर प्रकाश डालिए। (15)

3. कर्मभूमि उपन्यास में चित्रित समस्याओं का वर्णन कीजिए। (15)

अथवा

'कर्मभूमि उपन्यास स्वतंत्रता आंदोलन का दस्तावेज है'-इस कथन के आलोक में अमरकांत का चरित्र-चित्रण कीजिए।

4. रागदरबारी उपन्यास में निहित व्यंग्यात्मक यथार्थ को स्पष्ट कीजिए। (15)

अथवा

रागदरबारी उपन्यास के शीर्षक पर प्रकाश डालते हुए रूप्पन बाबू का चरित्र-चित्रण कीजिए।

5. निम्नलिखित में से किसी एक की सप्रसंग व्याख्या कीजिए। (12)

(क) "शान्तिकुमार ने आवेश से कहा-'कहीं नहीं। शास्त्र में यह लिखा है कि घी में चरबी मिलाकर बेचो, टेनी मारो, रिश्वतें खाओ, आँखों में धूल झोंको और जो तुमसे बलवान हैं, उनके चरण धो-धोकर पियो, चाहे वह शास्त्र को पैरों से ठुकराते हों।

तुम्हारे शास्त्र में यह लिखा है, तो यह करो। हमारे शास्त्र में तो यह लिखा है कि भगवान् की दृष्टि में न कोई छोटा है, न बड़ा, न कोई शुद्ध और न कोई अशुद्ध। उसकी गोद सबके लिए खुली हुई है।"

(ख) अंग्रेजों के ज़माने में वे अंग्रेजों के लिए श्रद्धा दिखवाते थे। देसी हुकूमत के दिनों में वे देसी हाकिमों के लिए श्रद्धा दिखवाने लगे। वे देश के पुराने सेवक थे। पिछले महायुद्ध के दिनों में, जब देश को जापान से ख़तरा पैदा हो गया था, उन्होंने सुदूर-पूर्व में लड़ने के लिए बहुत से सिपाही भरती कराए। अब जरूरत पड़ने पर रातोंरात वे अपने राजनीतिक गुट में सैकड़ों सदस्य भरती करा देते थे। पहले भी वे जनता की सेवा जज की इजलास में जूरी और असेसर बनकर, दीवानी के मुकदमों में जायदादों के सिपुर्ददार होकर और गाँव के जमींदारों में लम्बरदार के रूप में करते थे। अब वे कोऑपरेटिव यूनियन के मैनेजिंग डायरेक्टर और कॉलिज के मैनेजर थे। वास्तव में वे इन पदों पर काम नहीं करना चाहते थे क्योंकि उन्हें पदों का लालच न था। पर उस क्षेत्र में जिम्मेदारी के इन कामों को निभानेवाला कोई आदमी ही न था और वहाँ जितने नवयुवक थे, वे पूरे देश के नवयुवकों की तरह निकम्मे थे। इसीलिए उन्हें बुढ़ापे में इन पदों को सँभालना पड़ा था।